बिशप जार्ज स्कूल एण्ड कालेज

कक्षा - 11

विषय - हिन्दी (व्याकरण)

पहले PDF में हमने आपको आपके हिन्दी पाठ्यक्रम की पूर्ण जानकारी दी। तथा आपके प्रश्न-पत्र के विषय में भी हमने विस्तार से बताया कि आपका सौ अंकों का प्रश्न-पत्र किस तरह से अलग-2 भागों में विभाजित किया जाता है। हमें आशा है कि आपको पूरी बातें स्पष्ट हो गयी होंगी। साथ ही हमने कुछ अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करने के लिए तथा कुछ मुहावरों के वाक्य भी बनाने के लिए दिया था। आप सब को हिन्दी व्याकरण के लिए एक मीडियम साइज का रजिस्टर बनाना होगा। जिसमें हम पहले PDF से जो भी व्याकरण हल करने के लिए दे रहे हैं वह उस रजिस्टर में क्रमांक के अनुसार लिख कर उसका उत्तर लिखते रहिए ताकि आगे हम आपजब भी मिलेंगे तो उसे देखकर हम जाँच (correct) करेंगे और आपको आपकी गलतियों से अवगत भी करा देंगे।

इस PDF में हम आपको कुछ निबंध के विषय दे रहे हैं जिसे आप लिखने का प्रयास कीजिए उसी रजिस्टर में। तथा एक अपठित गद्यांश भी दे रहे हैं जिसमें नीचे उससे संबंधित प्रश्न पूछे गए हैं।

अपठित गद्यांश (Unseen Passage) को अच्छी तरह पढ़ कर रजिस्टर में उसके प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखने का प्रयास कीजिए।

प्र०1- नीचे लिखे निबन्ध के समस्त विषयों को 400 शब्दों या उससे अधिक (उससे कम नहीं होना चाहिए क्योंकि परीक्षा में यही पूछा जाता है) में लिखने का प्रयास कीजिए -

1- मित्र हमारे व्यक्तित्व की कमियों को दूर करके हमें सफलता की ओर ले जाते हैं। इस बारे में अपने विचारों को निबंध के रूप में लिखिए।

2- टेलीविजन पर प्रतिभा-प्रदर्शन कार्यक्रमों ने सामान्य मनुष्य को अपनी प्रतिभा प्रकट करने हेतु एक मंच प्रदान किया है। इस विषय पर अपने विचार लिखिए।

3- विज्ञापन जहाँ नए उत्पादों की जानकारी उपभोक्ताओं को देता है। वहीं विज्ञापन की चकाचौंध से ग्राहक प्रायः असली माल खरीदने से वंचित रह जाते हैं। क्या आप इस तथ्य से सहमत हैं? तर्कसहित लिखिए।

4- संचार क्रांति और इलेक्ट्रानिक मीडिया के इस युग में समाचार-पत्रों ने अपने महत्व को बनाए रखा है। इस तथ्य से आप कहाँ तक सहमत हैं? अपने विचार लिखिए।

प्र०2 नीचे लिखे अवतरण (अपठित गद्यांश) को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

यह शरीर तो दुःखों से भरा हुआ है। फिर हम इसको और दुःखी क्यों बनायें? क्यों न इस शरीर से हम दूसरों के दुःखों को कुछ कम करें। यही हमारी सच्ची भक्ति है, यही साधना है यही जप-तप है। इससे बढ़कर पुण्यप्राप्ती का और कोई नहीं है। एक बात और भी है कि जब हम कोई अच्छा कार्य करते हैं तो मन प्रसन्न रहता है। आपभी किसी भूखे को भोजन कराइए जितना आनन्द उस भूखे को भूख मिटाने में आएगा, उससे कई गुना अधिक आनन्द आपको भोजन खिलाने में आएगा। जो आनन्द राजा शिबि को कबूतर के प्राण बचाने हेतु अपना माँस काट कर बाज को देने में आया, शायद वह आनंद बाज को माँस खाने में भी नहीं आया होगा। उनके इस त्याग को देखकर आज भी श्रद्धा से उनका नाम लिया जाता है। इसी प्रकार राजा हरिश्चंद्र को जो आनन्द राज्य दान करने में आया था, वह आनंद राज्य भोगने में भी नहीं आया होगा। इसी प्रकार परोपकार के अनेक उदाहरण मिलेंगे।

प्रकृति भी दूसरे की भलाई के लिए सदैव तत्पर रहती है। वृक्ष फलों से लदे रहते हैं परंतु स्वयं उन्हें नहीं खाते। वे हमारे लिए धूप में कष्ट सहन करते हैं। नदी के पानी को न जाने

कितने प्रकार से हम प्रयोग में लाते हैं, परंतु नदी सब कुछ सहन करके हमारी पिपासा को शांत करती है। इस प्रकार कोई धर्म ऐसा नहीं है जो हमारी इस परोपकार की भावना का विरोध करे। सबने एकमत होकर कहा, "यदि हम किसी का भला न कर सकें तो कम से कम उसे हानि भी नहीं पहुँचाए। जहाँ तक हो सके उसके दुःख को दूर करें।"

वही सच्चा मानव है, वही सच्चा जीवन है, वही धन्य है। जिसका जीवन दूसरों के हित में लगा हुआ है। जो दूसरों के हित में सदैव तत्पर रहते हैं। जो केवल दूसरों के लिए ही अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इससे बड़ा पुण्य उनके लिए संसार में और कोई नहीं है। यही उनके लिए कोटि यत्नों का फल है। यही तीर्थ है। वे तो मनुष्य में ही विश्वनाथ की तस्वीर देखते हैं।

प्रश्न-

(i) मानव को सच्ची आपत्ति क्या है? जब हम कोई अच्छा कार्य करते हैं तो क्या अनुभव करते हैं?

(ii) प्रकृति मानव को परोपकार की शिक्षा कैसे देती है?

(iii) संसार में सबसे बड़ा पुण्य क्या होता है?

(iv) राजा हरिश्चंद्र तथा राजा शिवि ने परोपकार के क्या-क्या कार्य किए थे?

(v) प्रस्तुत गद्यांश का शीर्षक लिखिए?